ISSN : **2583-3189 (E), 2583-0775 (P)**
Year-05, Volume-05, Issue-01
AMOGHVARTA

AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

उत्तर प्रदेश की पारंपरिक लोककला "चौक पूरना": एक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Author
विनय सिंह
सहायक आचार्य
इंस्टीट्यूट ऑफ फाईन आर्ट्स
सी.एस.जे.एम. यूनिवर्सिटी
कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध सार

भारतीय कला के इतिहास में एक महत्वपूर्ण भाग उसके क्षेत्रीय केन्द्रों से जुड़ा हुआ है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता का अद्वितीय समन्वय हमारे समक्ष परिलक्षित होता है, और उत्तर प्रदेश का चौक पूरना इस संदर्भ में एक अनूठी और गहरी सांस्कृतिक पहचान रखता है, जो इस राज्य की ग्रामीण जीवनशैली और धार्मिक मान्यताओं से जुड़ी हुई है। चौक पूरना, उत्तर प्रदेश में स्थित एक ऐसी पारंपरिक लोककला है, जहां पारंपरिक कला के साथ–साथ आधुनिक कला की धारा भी प्रगति की ओर बढ़ी। यहां की कला परंपरा ने भारतीय कला को नई दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, विशेष रूप से 20वीं सदी के मध्य में जब भारत में सामाजिक और सांस्कृतिक बदलावों के बीच कला का रूप बदल रहा था। पारंपरिक कला रूपों से लेकर नवीनतम चित्रकला शैलियों तक, इस विकास यात्रा में कई स्थानों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिनमें उत्तर प्रदेश का चौक पूरना एक प्रमुख लोक कला है। यह क्षेत्र न केवल पारंपरिक कला का स्थल रहा है, बल्कि यहाँ की कला ने आधुनिकता की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। देश के सभी प्रदेशों में इस लोककला को अलग–अलग नामों से पुकारा जाता है, जबकि अनेक बातों में इसमें समानता भी है। साधारणतया लोक कला स्त्री समाज से अधिक सम्बन्धित है। इनको चित्रित करते समय उनमें प्रेम, लगन व भक्ति की भावना निहित रहती है। वैसे तो उत्तर प्रदेश में लगभग 100 से अधिक व्रत और त्यौहार मनाये जाते है जिनमें प्रमुख रूप से होली, रक्षाबन्धन, जन्माष्टमी, गणेश चौथ, करवा चौथ, दीवाली एवं मकर संक्रान्ति इत्यादि। ये सभी कलाएं उत्तर प्रदेश की ही नहीं बल्कि भारत की उत्सवप्रिया और सौन्दर्य–दृष्टि का प्रमाण है। 'चौक पूरना' भारतीय संस्कृति में एक मांगलिक कार्य माना जाता है। इसके बनाने का उद्देश्य देवी–देवता का आवहान कर उन्हे आसन प्रदान करना होता है इसके साथ ही सुख–समृद्धि, सौन्दर्य के लिए बनाया जाता है। यहाँ अवसर विशेष, उत्सव, अनुष्ठान, संस्कार, पर्व से सम्बंधित व उससे जुड़े प्रतीकों का अंकन किया जाता है। उत्तर प्रदेश के हिन्दू परिवारों के लगभग सभी शुभ कार्यों में पूजा का विधान है, और इस पूजा में पूजा स्थल पर बनायी जाने वाली वेदी में सूखे आटे के प्रयोग से भूपृष्ठ पर ज्यामितीय आकृतियाँ बनायी जाती हैं जिसे 'चौक पूरना' कहते हैं जिस पर देवी–देवताओं और यज्ञवेदी को प्रतिष्ठित किया जाता है। इसे लोककला के शब्दों में धूलिचित्र कहा जाता हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य चौक पूरना के कला क्षेत्र की प्रमुखता, चौक पूरना और महिलाओं की भूमिका, चौक पूरना की कला परंपरा और आधुनिकता, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव, समकालीन समय में चौक पूरना का पुनःउत्थान, यहाँ के कलाकारों के योगदान जिन्होंने चौक पूरना को भारतीय कला के केंद्र के रूप में स्थापित किया का अध्ययन करना है।

मुख्य शब्द

यज्ञवेदी, धूलिचित्र, लोककला, चौक पूरना, आरा, अहपन, धार्मिक प्रतीक.

परिचय एवं विशेषताएँ

चौक पूरना एक प्रकार की पारंपरिक चित्रकला है, जिसे विशेष रूप से उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में घरों के आंगन और चौकों पर बनाया जाता है। यह क्षेत्र न केवल पारंपरिक कला की जड़ें समाहित किये हुए है, बल्कि यहाँ के कलाकारों ने आधुनिक कला के रूप में भारतीय कला में एक नई दिशा प्रदान की। यह कला मुख्यतः महिला कलाकारों द्वारा की जाती है और इसमें रंगीन पाउडर, चाक, सूखा आटा, चावल, आरा (बींसा), फूलों और अन्य प्राकृतिक सामग्रियों का प्रयोग किया जाता है। इस कला का उद्देश्य केवल सौंदर्य में वृद्धि करना नहीं है, बल्कि इसे एक धार्मिक क्रिया के रूप में भी देखा जा सकता है। चौक पूरना में प्रयुक्त पैटर्न और डिजाइनों में फूलों, ज्यामितीय आकारों, धार्मिक प्रतीकों (जैसे गणेश जी, लक्ष्मी माता) का चित्रण होता है, जो शुभता और पवित्रता का प्रतीक होते हैं। चौक पूरना के माध्यम से न केवल घरों को सजाया जाता है, बल्कि यह सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का एक सशक्त माध्यम है, जो परिवार के सामाजिक और धार्मिक मूल्यों को प्रदर्शित करता है।

मानव का स्वभाव हमेशा रचनात्मक रहा है। वह आरम्भ से लेकर अब तक कुछ न कुछ रचता आया है, अपने अनुभवों तथा जीवन में घट रही घटनाओं को आधार बनाकर जो भी साम्रगी उसे प्राप्त हुई उसी से प्रेरणा पाकर उन घटनाओं को आकार बद्ध करने लगा, इस प्रक्रिया से जो भी रूप बने वह मानव कला इतिहास के प्रारम्भिक साक्ष्य हैं। लोककला, लोक मानस से ही पोषित होती है और उसे ही प्रतिबिम्बित करती है लोककला में व्यक्ति कुछ रेखाओं के द्वारा ही ओज–पूर्ण रूप प्रदान करता है। यह कला किसी विद्यालय अथवा संस्थानों में पोषित नहीं होती बल्कि, यह अपने बड़े–बुजुर्गों (माँ, दादी, नानी) से सीखकर या उन्हें बनाता हुआ देखकर सीखतें हैं। उत्तर प्रदेश के भूमि चित्रण में प्रत्येक शुभ अवसरों पर 'चौक पूरना' अनिवार्य है। यह आटे या सूखे रंगों से बनाया जाता है जिसे 'चौक डालना' भी कहा जाता है। 'चौक' अर्थात आंगन या चारों दिशाओं की पूर्णता का भाग प्रकट करता है। यह चौक नित्यवृत नैमित्तिक व्रत–त्योहार तथा सोलह संस्कारों के प्रत्येक चरण पर बनाये जाते हैं। सभी परिवारों में पारम्परिक चौकों को बनाना आस्था का प्रतीक माना जाता है। 'चौक' का चित्रांकन बनाने वाली स्त्री की कल्पना शक्ति तथा कलात्मकता का परिचायक होता है।

आज हम कलाओं के विविध स्वरूप देखते हैं जिनमें लोककला भी एक प्रमुख विधा रही है। वर्तमान में जीवन के विविध पहलुओं पर इस विधा के प्रभाव को देखा जा सकता है। लोककला मावन की सहज अभिव्यक्ति का स्वरूप रही जो सहज, सरल व सर्वग्राहिता के कारण समाज के प्रत्येक वर्ग को एक समान आनन्दित करती है। इसकी प्रमुख विशेषता स्वपोषण रही है। 'चौक' रचना में लोक–कल्याण की भावना निहित होती है। 'लोक' अर्थात सरल तथा अपरिष्कृत समाज जिसका मूल स्वभाव संस्कारों पर आधारित होता है और जिसके संस्कार दैनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर आधारित होते हैं।

चौक पूरना का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व

उत्तर प्रदेश की पारंपरिक लोककला चौक पूरना एक ऐसी कला है, जो न केवल सौंदर्य का प्रतीक है, बल्कि यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक धरोहर और धार्मिक परंपराओं का भी हिस्सा है। यह कला मुख्य रूप से घरों के आंगन और चौकों पर बनाई जाती है, जिसे विशेष अवसरों, जैसे धार्मिक त्योहारों, विवाहों, और अन्य शुभ अवसरों पर बनाया जाता है। चौक पूरना न केवल एक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है, बल्कि यह परिवार और समुदाय की धार्मिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक एकता को प्रस्तुंत करता है। इस कला का इतिहास और सांस्कृतिक महत्व अत्यंत गहरा है, जो भारतीय ग्रामीण जीवन और धार्मिक मान्यताओं के एक अभिन्न अंग के रूप में विकसित हुआ है। चौक पूरना की कला में परंपरागत भारतीय कला का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है, जिनमें रेखांकन, रंगों की बारीकी, और धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीकों का समावेश होता है। इस क्षेत्र का सांस्कृतिक विकास विशेष रूप से बृज संस्कृति,

मथुरा और वृंदावन के काव्यात्मक प्रभावों के कारण हुआ है।

चौक पूरना की उत्पत्ति और विकास भारतीय समाज के ग्रामीण क्षेत्रों में हुआ। यह कला उत्तर प्रदेश में विशेष रूप से प्रचलित है, लेकिन इसे पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में विभिन्न रूपों में अपनाया गया है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो यह कला भारतीय समाज के पारंपरिक और धार्मिक जीवन से जुड़ी हुई है। इसके उत्पत्ति के बारे में कोई सटीक प्रमाण नहीं हैं, लेकिन यह माना जाता है कि इस कला का विकास प्राचीन भारतीय सभ्यता के समय हुआ था, जब लोग अपने घरों को पवित्र और शुभ बनाने के लिए विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक कार्य करते थे। महिलाएँ घर के आंगन में रंग–बिरंगे डिजाइन और धार्मिक प्रतीक बनाती थीं, जो घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते थे। प्रारंभ में, यह कला केवल ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित थी, लेकिन समय के साथ, शहरी क्षेत्रों में भी इसका विस्तार हुआ।

चौक पूरनों में मांगलिक चौक, कल्याणकारी चौक, संस्कार चौक, व्रत–त्योहार चौक अनिवार्य रूप से शुभ मुहूर्त अवसरों पर बनाये जाते हैं। चौक पूरना भारत में एक महत्वपूर्ण भूमि लोकचित्रण परम्परा है जिसे विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न–भिन्न नामों से जाना जाता है। यह परम्परा विभिन्न राज्यों में लोक संस्कृति की विविधता के कारण अलग–अलग नामों से प्रचलित है। चौक में स्वास्तिक, चरण, कलश, कमल, शंख, सूर्य, चन्द्र, सप्त–कमल, अष्ट्–कमल आदि प्रतीको का अंकन किया जाता है, जो दार्शनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होते है जैसे– कलश को शरीर एवं उसमें भरे हुए जल को जीवन रस का प्रतीक है तथा लक्ष्मी से सम्बन्धित माना जाता है। किसी भी मंगलिक कार्यों में कलश स्थापना अवश्य की जाती है इसलिए इसे मंगल का भी प्रतीक माना जाता है।

सांस्कृतिक महत्व

चौक पूरना का सांस्कृतिक महत्व अत्यधिक है। यह कला न केवल घरों की सौंदर्य का हिस्सा है, बल्कि यह भारतीय समाज के धार्मिक और सांस्कृतिक विश्वासों का अभिन्न अंग है। यह कला विशेष रूप से धार्मिक अवसरों और त्योहारों पर बनाई जाती है, जैसे कि दीवाली, होली, गणेश चतुर्थी, और अन्य प्रमुख हिंदू त्योहारों पर। इसके पश्चात्, यह परिवार की एकता, सौंदर्य और सद्भावना का भी प्रतीक है।

1. **धार्मिक महत्वः** चौक पूरना का सबसे बड़ा सांस्कृतिक महत्व इसके धार्मिक पहलुओं में निहित है। यह कला घरों को धार्मिक रूप से पवित्र और शुभ बनाने का कार्य करती है। माना जाता है कि चौक पूरने से घर में समृद्धि, सुख–शांति और सकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश होता है। विशेष रूप से, इस कला में देवी–देवताओं के चित्रण, जैसे गणेश जी, लक्ष्मी माता, सूर्य और चाँद का चित्रण किया जाता है, जो घर में समृद्धि और सुख की कामना का प्रतीक होते हैं। यह कला हिंदू धर्म की परंपराओं और विश्वासों को संरक्षित करती है और धार्मिक आस्थाओं के साथ गहरे रूप से जुड़ी हुई है।
2. **सामाजिक महत्वः** चौक पूरना का सामाजिक महत्व भी अत्यधिक है। यह न केवल एक कला है, बल्कि यह समाज में सामूहिकता और एकता का प्रतीक भी है। परिवारों में महिलाएँ इस कला का अभ्यास करती हैं और इसे त्योहारों और अन्य विशेष अवसरों पर अपने घरों में सजाती हैं। इस प्रक्रिया में महिलाएँ एक साथ आती हैं और अपने समुदाय की सांस्कृतिक परंपराओं को साझा करती हैं। इस तरह, चौक पूरना महिलाओं की सामूहिक कार्यशक्ति और रचनात्मकता का प्रतीक बन गई है। इसके माध्यम से, वे अपने घरों और समाज में सकारात्मकता और सौंदर्य का संचार करती हैं।
3. **परिवार और समाज में एकताः** चौक पूरना के माध्यम से घरों में एकता और सामूहिकता का संदेश दिया जाता है। यह कला परिवारों को एकजुट करती है और सांस्कृतिक और सामाजिक संबंधों को मजबूत बनाती है। विशेष रूप से त्योहारों के दौरान, जब पूरे परिवार और समुदाय एक साथ आते हैं, चौक पूरना एक सांस्कृतिक कड़ी के रूप में कार्य करता है, जो एकजुटता और सामूहिकता को बढ़ावा देता है।

चौक पूरना और महिलाओं की भूमिका

चौक पूरना का समाज में महत्वपूर्ण स्थान है, विशेषकर महिलाओं के बीच। भारतीय समाज में यह माना जाता है कि घर की महिलाएँ परिवार और समाज की सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखती हैं। विशेष रूप से उत्तर प्रदेश में, महिलाएँ इस कला को न केवल पारंपरिक रूप से जीवित रखती हैं, बल्कि इसे एक सांस्कृतिक धरोहर के रूप में संरक्षित करने के प्रयास भी करती हैं। महिलाएँ चौक पूरने के दौरान अपने घरों को धार्मिक रूप से पवित्र बनाने के साथ–साथ अपने समुदाय में सौंदर्य और रचनात्मकता का योगदान करती हैं।

चौक पूरना की कला परंपरा और आधुनिकता

चौक पूरना में कला की शुरुआत धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं से हुई। यहाँ के चित्रकला में प्रमुख रूप से मंदिरों की दीवारों पर बने चित्र, धार्मिक पेंटिंग्स और लोक कला का प्रभाव था लेकिन जैसे–जैसे समय बदलता गया, यहाँ के कलाकारों ने इन पारंपरिक रूपों में आधुनिकता की छाप छोड़नी शुरू की। पश्चिमी कला के प्रभाव ने यहाँ के कलाकारों को नए दृष्टिकोण और तकनीकों के साथ प्रयोग करने की प्रेरणा दी।

उत्तर प्रदेश भारत का एक सीमान्त प्रदेश है। यह प्रदेश वर्तमान में 75 जिलों में विभक्त है। हिन्दू कथा साहित्य में यह प्रदेश पवित्र माना जाता है, क्योंकि रामायण और महाभारत में जिन महान व्यक्तियों और देवताओं का वर्णन है वे यहीं थे। यह प्रदेश सदैव से धर्म एवं संस्कृति के केन्द्र के साथ–साथ प्राचीन समय से ऋषि मुनियों की तपो भूमि रहा है। 'चौक' अवसर अनुकूल निर्मित की जाती है तथा मनोभावों पर आधारित इनके आकार व मांगलिक प्रतीक बनाये जाते हैं। शुभ कार्यों में हल्दी, सूखे आटे, रोली, गेरू, चूना आदि से त्रिभुजाकार, षट्कोण, आयताकार, गोलाकार चौक पूरी जाती है। चौक की रचना मान्यता एवं विधि अनुसार प्रायः कुआंरी कन्यायें, विवाहित स्त्रियाँ एवं पुरोहितों द्वारा की जाती है। प्रत्येक हिन्दू परिवार में इस प्रकार के मंगलमयी वातावरण को तैयार करने के लिए भूमि एवं भित्ति चित्रांकन आवश्यक तत्व माना जाता है। चौक पूरने का स्थान आंगन, देहरी, चबूतरा, द्वार, मुख्यद्वार, देवस्थान, संस्कार स्थल, हवन–यज्ञ स्थल, अनुष्ठानिक स्थल, कुण्ड स्थल, पूजन–पाठ स्थल, विवाह स्थल, रस्म–रिवाज स्थल आदि होते हैं। सर्वप्रथम भूमि को साफ करके गोबर या गेरू से लीपा जाता है या कभी–कभी लोग भूमि को पानी से धोकर ऐसे ही चौक पूरते हैं।

''चित्राकारी के लिए अच्छी तरह लिपी हुई, विस्तृत, कोमल, पवित्र, प्रसाद युक्त तथा सुरक्षित भूमि उत्तम होती है।''

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसारः ''लोकचित्रण धर्म की एक इकाई है, जिसे व्यक्ति अपनी धार्मिक भावनाओं को व्यक्त करने में प्रयोग में लाते हैं।''

चौक पूरना की तकनीक और विधि

चौक पूरना के कला में शैली और तकनीक के स्तर पर एक अद्वितीय समन्वय हमें देखने को मिलता है। चौक पूरना कला में मुख्यतः पारंपरिक चित्रकला की तकनीकें और शैलियों का उपयोग कलाकारों के द्वारा किया जाता था। यहाँ के कलाकारों ने तेल रंग, जल रंग, और अन्य कागजी तकनीकों का उपयोग किया साथ ही, भारतीय हस्तकला जैसे पैटर्न और चित्रों के माध्यम से कलाकारों ने आधुनिकता को पारंपरिकता के साथ जोड़ा। इस मिश्रण ने चौक पूरना के कला को एक नई दिशा प्रदान की, जहां चित्रकला के माध्यम से समाज की बदलती हुई तस्वीर को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया।

चौक पूरने की तैयारी

चौक पूरना की तकनीक की शुरुआत साफ–सफाई से होती है। सबसे पहले घर के आंगन को अच्छे से साफ किया जाता है। यह कदम बहुत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इस प्रक्रिया में शुद्धता और पवित्रता का प्रतीक माना जाता है। घर के आंगन को सफाई से तैयार करने के बाद, उस पर चौक पूरने का कार्य प्रारम्भ किया जाता है।

सामग्री का चयन और प्रयोग

चौक पूरने में मुख्य रूप से रंगीन पाउडर, हल्दी, सूखे आटे, रोली, चाक, फूलों और विभिन्न प्राकृतिक सामग्री का प्रयोग किया जाता है। रंगीन पाउडर का प्रयोग सबसे अधिक किया जाता है, जो विभिन्न रंगों में उपलब्ध होते हैं। ये पाउडर पारंपरिक रूप से रंगीन चाक के होते हैं, और इनमें हल्दी, गुलाल, और अन्य प्राकृतिक रंग होते हैं। चाक (आरा) का भी विशेष महत्व है। इसका उपयोग आधार रेखा बनाने के लिए किया जाता है, जो डिजाइन को आकार देने में सहायता करता है। महिलाएँ अक्सर इसे एक समतल और सुव्यवस्थित रूप में बनाती हैं ताकि डिजाइन समान रूप से फैले और सुंदर दिखाई दे। इसके पश्चात्, फूलों की पंखुड़ियाँ और पत्तियाँ भी चौक पूरने में प्रयोग की जाती हैं, जो पारंपरिक रूप से शुभता का प्रतीक मानी जाती हैं।

चौक पूरने की विधि

चौक पूरने की विधि में कई महत्वपूर्ण चरण होते हैं:

1. **आधार रेखा का निर्माणः** चौक पूरने की प्रक्रिया चाक से की जाती है। सबसे पहले, आंगन या चौक में एक आधार रेखा खींची जाती है, जिसे चाक से बनाया जाता है। यह रेखा उस डिजाइन की सीमा को निर्धारित करती है और पूरी प्रक्रिया में एक गाइड का काम करती है।
2. **डिजाइन का चयन और चित्रणः** चौक पूरने के डिजाइन में ज्यामितीय रूप, धार्मिक प्रतीक, और फूल–पत्तियों के पैटर्न होते हैं। ये डिजाइन पारंपरिक रूप से हस्तनिर्मित होते हैं और प्रत्येक डिजाइन का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व होता है। डिजाइन को ध्यान से खींचने के बाद, उसे रंगीन पाउडर से सजाया जाता है।
3. **रंगों का प्रयोगः** रंगीन पाउडर को सावधानी से और आंतरिक पैटर्न के अनुसार प्रयोग किया जाता है। आमतौर पर हल्के और गहरे रंगों का संयोजन किया जाता है, जिससे डिजाइन अधिक जीवंत और आकर्षक दिखाई दे। उदाहरण के लिए, पीले और लाल रंग को शुभता और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है, जबकि हरे रंग का प्रयोग प्रकृति और जीवन के संकेत के रूप में प्रयोग किया जाता है।
4. **धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीकों का चित्रणः** चौक पूरने में धार्मिक प्रतीकों का विशेष महत्व है। विशेष रूप से गणेश जी, सूर्य, चाँद, लक्ष्मी माता और अन्य देवी–देवताओं के चित्र बनाए जाते हैं। इन प्रतीकों की मान्यता है कि ये घर में समृद्धि और खुशहाली लाते हैं।
5. **फूलों और प्राकृतिक सामग्रियों का प्रयोगः** चौक पूरने में फूलों और पत्तियों का भी प्रयोग किया जाता है, जिससे डिजाइन में और भी रंग और सुंदरता जुड़ती है। विशेष रूप से, गुलाब, चमेली और अन्य शुभ फूलों का प्रयोग किया जाता है। ये प्राकृतिक तत्व न केवल सौंदर्य में वृद्धि करते हैं, बल्कि इन्हें शुभता और पवित्रता का प्रतीक भी माना जाता है।

चौक पूरना में बनाये गये प्रत्येक ज्यामितिक रूपों का अपना–अपना महत्व, मौलिकता तथा विशिष्टता होती है इसमें निर्मित शुभ एवं मांगलिक चिन्हों के गूढ़ अर्थ होते हैं। इसका प्रारम्भ केन्द्र बिन्दु से किया जाता है। बिन्दु परब्रह्म का प्रतीक स्वरूप है और इससे सृजन का प्रारम्भ माना जाता है। अनेक क्षेत्रों में लोक संस्कृति को उकेरने का यह सहज, सरल एवं लोकप्रिय आलेखन है किन्तु उत्तर–प्रदेश के क्षेत्र में इसकी विशेष भूमिका है। प्रायः प्रत्येक मांगलिक अवसरों पर घर तथा पूजा–स्थल को गोबर या मिट्टी से लीपकर चौक पूरी जाती है। विवाह, हवन, पूजन, कथा, व्रत, अतिथि सत्कार, बच्चे के जन्म के छठवें दिन छठी संस्कार के अवसर पर चौक पूरने का विधान मिलता है। चौक बनाने में अंगूठा व तर्जनी उंगली का प्रयोग किया जाता है।

भारतीय परम्परा के अनुसार किसी भी मांगलिक कार्य को आरम्भ करने से पूर्व श्री गणेश जी की पूजा अनिवार्य रूप से की जाती है तदुपरांत् अन्य देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना करके प्रार्थना की जाती है जिससे मांगलिक कार्य बिना किसी विघ्न के सफलता पूर्वक सपन्न हो जाए। विभिन्न मांगलिक अवसरों पर चौक पूरने का चलन शुभ माना

गया है इन चौक पूरनों में मांगलिक चौक, कल्याणकारी चौक, संस्कार चौक, व्रत त्योहार चौक अनिवार्य रूप से बनाये जाते हैं जिसे गेरू, सूखा आटा (गेहूं व चावल), हल्दी, अहपन (पीसे हुए चावल का घोल), फूलों, गाय के गोबर आदि के माध्यम से बनाते हैं।

चौक पूरना को विभिन्न प्रयोजनों के अनुसार निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है:

- **मांगलिक चौक:** मांगलिक कार्य को तिथि, माह, पक्ष (शुक्ल, कृष्ण), नक्षत्र, गणना के अनुसार किए जाने का विधान है। चौक का निर्माण मांगलिक अवसरों (विवाह, गृहप्रवेश, वर्षगांठ, छठी आदि) पर किया जाता है। भूमि को गोबर से लीपकर, स्वच्छ व साफ करके भूमि पर अलंकरण किये जाने का विधान होता है इसे ही मांगलिक चौक पूरना कहते हैं।

- **कल्याणकारी चौक:** यह धार्मिक दृष्टि ये महत्वपूर्ण है। चौक देवी–देवता को आसन देने के लिए प्रयोग किया जाता है जैसे– किसी विशेष अनुष्ठान, सत्यनारायण की कथा, श्रीमद् भागवत कथा एवं अखण्ड रामायण पूजा–पाठों में मूर्ति स्थापित करने वाले स्थान पर चौक का निर्माण किया जाता है। कल्याणकारी चौक, हवन कुण्ड, सूखा आटा, हल्दी एवं रोली।

- **संस्कार चौक:** हिन्दू धर्मानुसार सोलह संस्कार होते है जो जन्म से ही आरम्भ हो जाते हैं लगभग सभी संस्कारों में चौक पूरने का विधान दिखाई देता है। जन्म के समय दीवार पर शक्ति के देवताओं को अंकित कर दिया जाता है परिवारजनो के विश्वास के अनुसार देवता जच्चा व बच्चा दोनों की रक्षा करते हैं। अन्नप्राशन एवं पाटी पूजन में देव–स्थान पर चौक बनाए जाने की परम्परा होती है। उपनयन संस्कारों में चौक में ओम, स्वास्तिक, श्री आदि प्रतीकों से चतुष्कोण चौक का निर्माण किया जाता है। ओउम, वेद आरम्भ, संस्कार, स्वास्तिक चौक में उपनयन संस्कार और श्री चौक

पर समावर्तन संस्कार किये जाते हैं। संस्कार चौक, सूखा आटा एवं गेरू।

- **व्रत त्योहार चौकः** हिन्दू धर्म में अनेक त्योहार व व्रत मनाएं जाने की परम्पराएं है और इन अवसरों पर घर की वरिष्ठ महिलाएं व पुरोहित चौक पूरने का चलन करते हैं। चौक नवरात्री में कलश स्थापना हेतु, रक्षाबन्धन में भाई के लिए, गणेश चतुर्थी में श्री चौक चौकगणेश के आगमन हेतु, दीपावली में माँ लक्ष्मी के आगमन हेतु, गोवर्धन में गोवर्धनधारी के पूजन हेतु, होली में होलिका दहन हेतु आदि त्योहारों पर भिन्न–भिन्न व्रत चौक बनाई जाती है, जिसे आटा, हल्दी, रोली, गेरू, गोबर आदि से निर्मित किया जाता है।

व्रत त्योहार चौक, भईया दूज, पीसा हुआ चावल एवं हल्दी

प्रमुख कलाकारों का योगदान

चौक पूरना, उत्तर प्रदेश, भारतीय कला के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, विशेष रूप से आधुनिक कला के क्षेत्र में। इनमें से एक प्रमुख नाम रघुनाथ सिंह का है, जिन्होंने अपने चित्रों के माध्यम से भारतीय समाज की समस्याओं को उकेरा। उनके चित्रों में पारंपरिक धार्मिक विषयों को आधुनिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया था, जिससे उनकी कृतियाँ न केवल कला प्रेमियों बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों के लिए एक संदेश भी थीं। इस क्षेत्र के कलाकारों ने पारंपरिक कला रूपों को नए दृष्टिकोण और शैलियों के साथ मिश्रित कर एक अनूठी कला शैली को प्रस्तुत किया। यहाँ के कलाकारों ने न केवल अपनी कृतियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति को जीवित रखा, बल्कि आधुनिकता को भी अपनाया। चौक पूरना के प्रमुख कलाकारों और उनकी कृतियों ने भारतीय कला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

1. **रघुनाथ सिंहः** रघुनाथ सिंह चौक पूरना के सबसे प्रसिद्ध और प्रभावशाली कलाकारों में से एक थे। उन्होंने भारतीय पारंपरिक चित्रकला को पश्चिमी कला शैलियों के साथ मिलाकर एक नई दिशा दी। रघुनाथ सिंह के चित्रों में धार्मिक और सामाजिक विषयों का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है।

   रघुनाथ सिंह के चित्रों का मुख्य आकर्षण उनकी रंगों की गहराई और भावनाओं का सशक्त चित्रण था। उनकी कृतियों में भारतीय जीवन की विविधता और जटिलताओं को प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया गया था। उनकी प्रमुख कृतियों में स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित चित्र और ग्रामीण जीवन के दृश्य शामिल थे। उनके चित्रों ने भारतीय समाज की राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों को एक नया रूप प्रदान किया।

2. **भगवती प्रसादः** भगवती प्रसाद चौक पूरना के एक और प्रमुख कलाकार थे, जिन्होंने अपनी कृतियों में भारतीय परंपराओं और आधुनिक शैलियों का अद्भुत मिश्रण प्रस्तुत किया। भगवती प्रसाद ने भारतीय चित्रकला में पश्चिमी प्रभावों का समावेश करते हुए नए प्रयोग किए। उनके चित्रों में भारतीय संस्कृति, लोक जीवन और राष्ट्रीयता के मुद्दे प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं।

   भगवती प्रसाद के कार्यों में ताजगी और आधुनिकता का अहसास होता है, साथ ही वे कला के माध्यम से भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं पर भी टिप्पणी करते हैं। उनकी कृतियाँ भारतीय परंपरा से जुड़ी हुई थीं, लेकिन साथ ही उन्होंने समकालीन मुद्दों पर भी ध्यान केंद्रित किया। उनके कार्यों में परंपरागत चित्रकला के साथ–साथ अभिव्यक्तिवाद और समकालीन चित्रकला के तत्व भी स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

3. **नंदलाल बोसः** नंदलाल बोस का नाम भारतीय कला के प्रमुख चित्रकारों में लिया जाता है, और उनका संबंध चौक पूरना से भी जुड़ा हुआ है। उन्होंने भारतीय चित्रकला के पुनरुद्धार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और भारतीय कला में आधुनिकता का प्रभावशाली योगदान दिया। नंदलाल बोस ने भारतीय कलाओं के लोक रूपों को पुनर्जीवित किया और इन्हें अपने चित्रों में उकेरा।

   उनकी कृतियाँ भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं से प्रेरित थीं, लेकिन साथ ही उन्होंने आधुनिक शैलियों और तकनीकों को भी अपनाया। नंदलाल बोस की प्रमुख कृतियाँ भारतीय मिथकों, ग्रामीण जीवन और स्वतंत्रता संग्राम के प्रतीकों को चित्रित करती थीं। उन्होंने भारतीय चित्रकला के लिए एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जो पश्चिमी कला शैलियों के साथ भारतीय संदर्भों को जोड़ता था।

4. **नरेश कुमार यादवः** नरेश कुमार यादव चौक पूरना के एक महत्वपूर्ण समकालीन कलाकार थे जिन्होंने आधुनिक कला के विकास में योगदान दिया। उनके चित्रों में आधुनिक तकनीकों और पारंपरिक भारतीय शैलियों के संतुलित मिश्रण को देखा जा सकता है। उन्होंने भारतीय जीवन के विभिन्न पहलुओं, जैसे कि समाजिक असमानता, आर्थिक विषमताएँ और स्वतंत्रता संग्राम, को अपनी कला में प्रमुखता से चित्रित किया।

   नरेश कुमार यादव की कृतियों में चित्रकला की आधुनिक तकनीकों का प्रयोग किया गया, जिनमें छायांकन और परिप्रेक्ष्य जैसे भाग शामिल थे। उनके कार्यों में भारतीय संस्कृति और समाज के संकटों का चित्रण किया गया, और उन्होंने अपनी कृतियों के माध्यम से समकालीन समाज के मुद्दों को दीप्तिमान् किया।

सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव

चौक पूरना न केवल एक कला है, बल्कि यह समाज में सामूहिकता, परिवार के बंधन, और धार्मिक विश्वासों का प्रतीक भी है। इस कला के माध्यम से महिलाएँ एकता और भाईचारे का संदेश देती हैं। इसके पश्चात्, यह कला ग्रामीण समाज में महिला सशक्तिकरण का प्रतीक भी बन गई है, क्योंकि यह उनके रचनात्मक और सांस्कृतिक योगदान को सम्मानित करती है।

समकालीन समय में चौक पूरना का पुनःउत्थान

समकालीन समय में चौक पूरना की परंपरा में कुछ बदलाव आए हैं। शहरीकरण के साथ—साथ यह कला अब केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित नहीं रही, बल्कि शहरी समाज में भी इसके आकर्षण और सांस्कृतिक महत्व को पहचाना गया है। आजकल, कई कलाकार इस पारंपरिक कला को आधुनिक रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं, जहाँ विभिन्न रंगों और डिजाइनों का उपयोग किया जा रहा है। हालांकि, पारंपरिक रूपों का संरक्षण और पुनःप्राप्ति आवश्यक है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इस लोककला को समझ सकें और उसे अपना सकें।

निष्कर्ष

चौक पूरना, उत्तर प्रदेश ने भारतीय कला के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यहाँ की कला ने भारतीय कला को समृद्ध और विविध बनाया है, और यह क्षेत्र भारतीय कला के विकास में प्रमुख भूमिका को निभाता है।

उत्तर प्रदेश की 'चौक पूरना' का महत्व यहाँ के सामाजिक एवं साँस्कृतिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग है जिसमें प्रतीकों के गूढ़ दर्शन, कलात्मक मूल्यों एवं सौंदर्य के तत्वों को सरलता से आत्सात् किया जा सकता है। चौक के स्वरूप में स्थानीय भिन्नता दिखाई देती है लेकिन इसे बनाने का भाव एक ही होता है। चौक पूरना उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत है। विविध लोकाचारों में इनकी विशिष्टता के दर्शन हमें प्राप्त होते है। इसी कारण ही शायद यह अपने मूल स्वरूप को वर्तमान भी जीवित किये हुए है।

संदर्भ सूची

1. वर्मा, बिमला (1987) *उत्तर प्रदेश की लोककला, भूमि और भित्ति अलंकरण,* जय श्री प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन पृ. 24।

2. वर्मा, बिमला (1987) *उत्तर प्रदेश की लोककला,* जय श्री प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन पृ. 24 व 25।

3. गुप्त, हृदय (2018) चौक पूरना (उत्तर प्रदेश की भूमि अंकन लोक कला), उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।

4. गुप्त, हृदय (1 जनवरी 2022) देराज कला, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

5. गुप्त, हृदय (2017) उत्तर प्रदेश की लोक कला 'चौक पूरना' का एक अवलोकनात्मक अध्ययन, *शोध सचयन,* वाल्यूम 8, इश्यू 2, पृ. 20–24।

6. राय, जय प्रकाश; सिंह, योगेन्द्र प्रताप (1999) *उत्तर मध्य क्षेत्र की लोक संस्कृति,* प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

7. कासलीवाल, मीनाक्षी 'भारती', (2021) *ललित कला के आधरभूत सिद्धान्त,* राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 9वीं संस्करण।

8. Garg, A. (2024) *An Introduction to the Folk Art of Uttar Pradesh 'Chauk Poorna' Which Is Made on Auspicious Occasions, Knowledgeable Research: A Multidisciplinary Journal,* Vol.02, No.08, March, 2024, p. 11-15.

9. Jaitly, Ajay and Pal, Saptami (2023) *मांगलिक अवसरों पर बनने वाली लोककला (चौक पूरना) उत्तर प्रदेश के संदर्भ में, ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts,* Vol. 4, Issue 1, January–June 2023, p. 29-33.

10. Jaitly, A. (2012) Kalaon Ka Manas Manthan, Nawsakshar Sansthan, Prayagraj, p. 52.

11. Singh, R.S. (2020) *Lok Riti-Riwaj,* State Lalit Kala Acadmey, Uttar Pradesh, p. 6.

12. Saxena, S.B. (2013) *Art Theory and Tradition,* Prakash Book Depot, Bareilly.

——==00==——